RJPP, Vol. XXII, No.2, April - Sept. 24, ISSN (P) : 0976-3635, (e) :2454-3411
Impact Factor 8.858

देश के उत्कृष्ट व विकसित रूप में शिक्षा में संस्कृति व कौशल की भूमिका

डॉ0 चंचल देवी
असिस्टेन्ट प्रोफेसर राजनीति विज्ञान
श्रीमती बी0डी0 जैन गर्ल्स पी0जी0 कॉलेज,
आगरा (उ0प्र0)
ईमेलः

सारांश

अपनी संस्कृति का ज्ञान और सम्मान स्वयं की, समाज की, राष्ट्र की उन्नति के लिए परम आवश्यक है। अतः आवश्यकता है कि देश का प्रत्येक नागरिक भारतीय संस्कृति व सभ्यता का प्रतीक बने और देश को गौरवान्वित करे। इसके लिए शिक्षा महती भूमिका का निर्वाह कर सकती है। विभिन्न स्तरों पर शिक्षा में संस्कृति व कौशल को समाहित किया जाना देश के समग्र विकास के लिए आवश्यक है। शिक्षा व्यक्ति का सर्वांगीण (बौद्धिक, सामाजिक, मानसिक) विकास करती है और उसे सुसंस्कृत रहने के लिए प्रेरित करती है। जहाँ शिक्षा में संस्कृति के द्वारा हम आजकल घटित होने वाली अनेक प्रकार की निकृष्ट व हृदय विदारण करने वाली सम सामयिक घटनाओं को कम या शायद समाप्त भी कर सकते है। वहीं कौशल शिक्षा के द्वारा विघार्थी अपने भविष्य को उन्नत और समृद्ध बनाने के साथ–साथ रोजगार परक निर्णय भी ले सकता है। कौशल शिक्षा या शिक्षा में कौशल का समायोजन आत्मनिर्भरता को प्रोत्साहन देता है, जिससे न केवल विद्यार्थी अपितु उसका परिवार, समाज व देश का विकास होता है। हमारा भारत जैसा महान देश जो अपनी संस्कृति और आध्यात्मिक विरासत के कारण सम्पूर्ण जगत में विख्यात है वहाँ शिक्षा की सार्थकता ही विद्यार्थी में चारित्रिक उच्चता, आध्यात्मिक बल, विशिष्ट कौशल तथा नैतिक शक्ति जाग्रत करने में मानी गई है।

Reference to this paper should be made as follows:

Received: 12.09.2024
Approved: 27.09.2024

डॉ0 चंचल देवी

देश के उत्कृष्ट व विकसित रूप में शिक्षा में संस्कृति व कौशल की भूमिका

RJPP April 24-Sept.24,
Vol. XXII, No. II,

PP. 177-181
Article No. 24

Online available at:
https://anubooks.com/journal-volume/rjpp-sept-2024-vol-xxii-no2

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में ही उसका जन्म होता है। समाज में रहते हुए ही उसका पालन–पोषण किया जाता है तथा समाज में रहते ही वह मृत्यु को प्राप्त होता है अर्थात् समाज से उसका घनिष्ठ सम्बन्ध रहता है। बालक को समाज में उचित अनुचित का ध्यान रखकर व्यवहार करना पड़ता है। उसे अपने व्यवहार हो नियंत्रित करने में कुछ नियमों का पालन करना पड़ता है, यदि बालक इन नियमों का पालन नहीं करता है तो न तो वह स्वयं सुखी रहता है और न समाज के अन्य सदस्यों को सुखी बनाता है। कहने का तात्पर्य है कि उसे अपने समाज की संस्कृति के नियमों का पालन करना पड़ता है।

यह सर्वविदित है कि शिक्षा से ही व्यक्ति के व्यवहार में परिवर्तन आता है। शिक्षा ही व्यक्ति के व्यवहार का शोधन करती है व सामाजिक मूल्यों की स्थापना करती है। शिक्षा स्वस्थ मानव मन का निर्माण करती है और व्यक्ति के अन्दर ऐसी चेतना लाती है जिसके माध्यम से वह अनुकूल परिस्थितियों का निर्माण करता है तथा व्याप्त अनिष्ट को दूर करता है। शिक्षा की सार्थकता विद्यार्थी में चारित्रिक उच्चता, आध्यात्मिक बल, विशिष्ट कौशल तथा नैतिक शक्ति जाग्रत करने में मानी गई है। संस्कारयुक्त शिक्षा वर्तमान समय की ज्वलंत समस्या है। किसी व्यक्ति अथवा समाज के संस्कार सम्पूर्ण सामाजिक संरचना को निर्धारित करते है जो किसी राष्ट्र व संस्कृति के अस्तित्व के लिए परम आवश्यक है तथा लोग जिनका सांस्कृतिक धरोहर के रूप में सम्मान करते हैं। बच्चों का पालन–पोषण, शिक्षा–दीक्षा समाज से ही प्रभावित होती है, क्योंकि वे समाज का अंग है। समाज में विद्यार्थियों मे संस्कारयुक्त मूल्यों के प्रति आस्था उत्पन्न करना विद्यार्थियों के समक्ष विभिन्न मूल्यों से सम्बन्धित परिस्थितियाँ उत्पन्न करना अत्यन्त आवश्यक है, जिससे वे उचित निर्णय ले सके तथा राष्ट्र को मूल्यों के संकट से उबारकर सही दिशा दे सके।

प्राचीन भारतीय शिक्षा का मुख्य उद्देश्य मानव में नैतिक नियमों की उन्नति करना था। उस समय शिक्षा की व्यवस्था इस प्रकार की जाती थी कि व्यक्ति को इस तथ्य की अनुभूति हो सके, कि नैतिक नियमों के पालन द्वारा व्यक्ति एक अच्छा व्यक्तित्व प्राप्त कर सकता है, अन्यथा वह पशु के समान है। नैतिकता उन सामूहिक गुणों का नाम है, जो सत्य, अहिंसा, परोपकार, विनम्रता तथा सच्चरित्र के मिलन से बनती है। यह जीवन यापन की वह पद्धति है, जिसमें सत् का समन्वय है, जिसमें कहीं भी कुछ भी ऐसा न हो जो असत् कहा जा सके। इस ब्रह्माण्ड का सर्वोत्कृष्ट पदार्थ है नैतिकता। विद्या, कला, धन, राजस्व कोई भी भौतिकवादी पदार्थ इसकी तुलना नहीं कर सकते है। यह प्रकाश का अनन्त स्त्रोत है।

इसके माध्यम से उत्तम आयु, उच्च विचार तथा दुनिया के हर सैद्धान्तिक पदार्थ को पाया जा सकता है। नैतिकता या कहें कि संस्कृतियुक्त शिक्षा के अभाव में मनुष्य का जीवन खोखला है जिसके फलस्वरूप वह उन्नति नहीं कर सकता, क्योंकि इसके माध्यम से ही अच्छे चरित्र का निर्माण होता है।

वर्तमान में परिवर्तन की गति तेज है। आज व्यक्ति शिक्षा को बिना परीक्षित किये ही स्वीकार कर लेता है, जबकि प्रत्येक विचार को जाँचकर विश्लेषित करके ही ग्रहण करना चाहिए। सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से यदि शिक्षा को कम्प्यूटराईज्ड करे तो सफलता नहीं मिलेगी, अपितु शिक्षा का तंत्र नष्ट होगा। सूचना तंत्र की शक्ति ज्ञान नहीं बल्कि सूचना ही ज्ञान है जो कि व्यक्ति में

अन्तरनिहित है। शिक्षा सूचना नहीं है बल्कि अन्तरक्रिया है। सूचना प्रौद्योगिकी कभी ज्ञान व विवके का स्थान नहीं ले सकती। शिक्षा वह है जिसके माध्यम से विद्यार्थियों में विवेक, ज्ञान, बुद्धि परिष्कृत व जाग्रत हो। साथ ही शिक्षा में मानवता, करूणा, सहानुभूति हो। यदि यह सभी तब मानव में नहीं हैं तो वह शिक्षित नहीं है। अतः वर्तमान में भारतीय समाज के समक्ष गहन समस्या संस्कृति युक्त मूल्यों की है। संस्कृति के मूल अर्थों को अपनाने की है। अतः आावश्यकता है कि शिक्षा के प्रत्येक परिवेश को संस्कृति युक्त गुणों से परिपूर्ण करने के लिए विद्यार्थियों में सहयोग, प्रेम, शांति, अंहिसा, साहस, त्याग, न्याय, समानता, विश्वबन्धुत्व जैसे मूलभूत गुणों का विकास करना, जिससे छात्र अपने व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन में दायित्वनिष्ठ नागरिक बन सके तथा उनमें लोकतांत्रिक मूल्यों सम्बन्धी राष्ट्रीय उद्देश्यों को ग्रहण करने व सम्मान करने की क्षमता विकसित हो तथा उनमें विस्तृत दृष्टिकोण का विकास करना, जिससे वे धार्मिक, भाषायी या लिंग भेद से उत्पन्न संकीर्णताओं से ऊपर उठ सकें।

नव सृजन, स्फूर्ति, ज्योति शिक्षा की पहचान है
शिक्षा से ही देश जगत में फैल रहा विज्ञान है
शिरोधार्य है यह संकल्प कि हम नित नई उड़ान भरें
शिक्षा में संस्कृति और कौशल का मजबूत निर्माण करें।

वर्तमान समय में नैतिक मूल्यों का विकास करने का उत्तरदायित्व शिक्षा में संस्कृति युक्त पाठ्यक्रम महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। पाठ्यक्रम में महापुरूषों की आत्मकथा, गीता, रामायण, कुरान शरीफ आदि शामिल करके विद्यार्थियों को इन मूल्यों से परिचित करवा सकते है ताकि वे समुद्र की तरह अनन्त गम्भीर, हिमालय की तरह उच्च, पृथ्वी के समान सहनशील, सूर्य के समान तेजस्वी, चन्द्रमा के समान शीतल बन सके। अहिंसा, सत्य, ब्रह्मचर्य, तप, स्वास्ध्याय, ईश्वर प्राणिधान आदि नियम कर्मों का परिचय करवा सकते है। अतिथि देवो भवः तथा मातृ देवो भवः को अपने अन्तःकरण में आत्मज्ञात कर सकते है।

अपनी संस्कृति का ज्ञान और सम्मान स्वयं की, समाज की, राष्ट्र की उन्नति के लिए परम आवश्यक है। अतः आवश्यकता है कि देश का प्रत्येक नागरिक भारतीय संस्कृति सभ्यता का प्रतीक बने और देश को गौरवान्वित करे। इसके लिए शिक्षा महती भूमिका का निर्वाह कर सकती है। विभिन्न स्तरों पर शिक्षा में संस्कृति व कौशल को समाहित किया जाना देश के समग्र विकास के लिए आवश्यक है।

जिस समाज के व्यक्ति अपने कौशल का ज्ञान प्राप्त कर उसका व्यावहारिक प्रयोग नहीं करते है, वह समाज आर्थिक रूप से उतना उन्नत और विकसित नहीं होता, जितना कि अपने कौशल प्रदर्शन करने वाले नागरिकों के देश। वास्तव में व्यक्ति के व्यक्तित्व को तभी पूर्ण माना जाता है जब उसमें जीवन के सभी क्षेत्रों में विकास करने की क्षमता उत्पन्न हो जाये। यदि व्यक्ति जीवन के किसी भी क्षेत्र में पिछड़ जाता है तो उसका व्यक्तित्व पूर्ण नहीं माना जा सकता। कौशल शिक्षा व्यक्ति को जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में विकसित होने का अवसर प्रदान करती है। कौशल शिक्षा निरीक्षण, कल्पना तथा संकलन, नियमन, स्मरण एवं संश्लेषण आदि सभी मानसिक शक्तियों का विकास करते हुए

शिक्षार्थी को चिन्तन–मनन, तर्क एवं सत्यापन आदि के अवसर प्रदान करती है, जिससे उसका बौद्धिक विकास होता है। यदि विद्यार्थियों को किसी भी क्षेत्र का उत्कृष्ट ज्ञान हो तो उनमें आत्मविश्वास जाग्रत हो जाता है।

कौशल शिक्षा के द्वारा विद्यार्थी अपने भविष्य को उन्नत और समृद्ध बनाने के साथ–साथ रोजगारपरक निर्णय भी ले सकता है। कौशल शिक्षा या शक्षा में कौशल का समायोजन आत्मनिर्भरता को प्रोत्साहन देता है। जिससे न केवल विद्यार्थी अपितु उसका परिवार, समाज व देश विकास को प्राप्त करता है। यदि हमारे देश के विद्यार्थी अपने कौशल को प्रदर्षित करें, दैनिक उपयोग में आने वाली वस्तुओं को स्वयं तैयार करें, नव सृजन में रूचि रखे व सृजनात्मक शक्ति को पहचानें तो राष्ट्र की निधि को बाहर जाने से राका जा सकता है। शिक्षा में कौशल हमें इस रूप में भी सशक्त बनाता है।

इस प्रकार संक्षेप में कहा जा सकता है कि वर्तमान समय की माँग एवं उपयोगिता के रूप में शिक्षा में संस्कृति व कौशल का समायोजन देश, समाज के उत्कृष्ट व विकसित रूप के लिए अति आवश्यक है। आज समाज में चारों ओर नैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों में जो गिरावट देखी जा रही है वह शिक्षा में संस्कृति द्वारा ही दूर की जा सकती है, क्योंकि संस्कृति को मूल्यों का सर्वोत्कृष्ट स्त्रोत माना जाता है। व्यक्ति संस्कृति से मूल्यों को चयन करता है। श्रेष्ठ व्यक्तियों द्वारा चुने मूल्यों पर सामान्य व्यक्ति भी चलते हैं।

सन्दर्भ

1. शिक्षा : उभरते आयाय 2004–2005
2. 30 जून 2024, हिन्दुस्तान समाचार–पत्र
3. डॉ0 अजय दुबे, डायमेनसन्स ऑफ न्यू एजूकेशन पॉलिसी–2020, ए ग्लोबल एप्रोच
4. जे0डी0 सिन्ह : इनक्लूसिव एजूकेशन इन इण्डिया–कॉनसेप्ट, नीड एण्ड चैलेन्जेस
5. प्रो0 एस0 राजीवलोचन "शिक्षा की दशा और दिशा" आउटलुक हिन्दी 1 जून 2020